ऑडियो नं. 19 मु. 25.12.91

राम ही रावण बनता है (कब, कैसे?)

(सिर्फ प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियों के लिए)

ओम शान्ति। ये है 25.12.91 का प्रातः क्लास। रिकॉर्ड चला है– ओम नमः शिवाय...।

मीठे–मीठे सिकीलधे बच्चों ने महिमा का गीत सुना। किसकी महिमा है? ऊँचे ते ऊँचे भगवान की। जिसको पतित–पावन, दुख–हर्ता, सुख–कर्ता कहा जाता है। सुख देने वाले को याद किया जाता है। दुख देने वाले को कोई याद करना नहीं होता। बच्चे जानते हैं सुख देने वाला एक ही परमपिता–परमात्मा है। सभी मनुष्य मात्र उनको ही याद करते हैं। और धर्म वाले भी कहते हैं कि बाप आकर के दुःख से लिबरेट कर सुख देते हैं; परन्तु ये नहीं जानते कि बाप सुख देते हैं, फिर दुःख कौन देता है और कब देता है? कौन नहीं जानते? और धर्म वाले ये नहीं जानते कि दुःख कौन देता है और कब देता है। ये भी तुम समझते हो नई दुनिया तो पुरानी ज़रूर होनी है। तो उनको दुःखधाम कहा जाता है।

कलियुग के अंत के बाद फिर सतयुग ज़रूर आएगा। सृष्टि तो एक ही है। मनुष्य इस सृष्टि के चक्र को बिल्कुल जानते नहीं हैं। इसलिए बाबा पूछते हैं– तुमको इतना मूर्ख बनाने वाला कौन है? बाप तो किसको दुःख नहीं देते हैं। बाप तो सदा सुख देते हैं। तुम जानते हो सुख देने वाले का जन्म स्थान भी भारत में है। किसका जन्म स्थान भारत में है? सुख देने वाले का जन्म स्थान भारत में है। जन्म किसे कहा जाता है? सुख देने वाले का (जन्म) भारत में कहाँ है? सुख देने वाला तो परमपिता–परमात्मा ही है। वो तो निराकार ज्योतिबिन्दु है, फिर जन्म स्थान कैसे होगा? (किसी ने कुछ कहा– ...) साकार में प्रवेश करता है? प्रवेश तो बहुत पहले से किया हुआ है, तो जन्म स्थान कौन–सा कहें? सिंध हैदराबाद या कलकत्ता? जन्म का मतलब क्या है? उसका तो दिव्य जन्म गाया हुआ है। अलौकिक जन्म गाया हुआ है। जन्म अर्थात् प्रत्यक्षता। हद में जैसे बच्चे का जन्म होता है, बच्चा बाहर आता है तो प्रत्यक्ष हुआ। गर्भ में पहले गुप्त था। ऐसे ही परमात्मा भी इस सृष्टि पर आता तो है; लेकिन प्रत्यक्ष नहीं होता, गुप्त रहता है। और जब प्रत्यक्ष होता है तो कहा जाता है– जन्म। तो प्रत्यक्षता रूपी दिव्य जन्म है।

पहले प्रत्यक्षता किसको होगी? घर में बच्चा पैदा होता है तो पहले–पहले किसको पता चलता है? मात–पिता को, घर वालों को, पास–पड़ोसियों, गाँव वालों को फिर बाहर वालों को। यहाँ तो फिर बेहद की बात है। कोई हद की स्थूल बात नहीं है। तो तुम जानते हो सुख देने वाले का जन्म–स्थान भी भारत में है, तो दुःख देने वाले का जन्म–स्थान भी भारत में है। दोनों का जन्म भारत में ही होता है। दुःख देने वाला कौन है? रावण। और सुख देने वाला कौन है उसकी भेंट में? राम। तो राम, जो सुख देने वाला है उसका जन्म भी भारत में है और दुःख देने वाला रावण, उसका जन्म भी भारत में है। दोनों ही भारत में हैं। भारत स्थान ही है या कोई व्यक्ति भी है? स्थान भी है तो (व्यक्ति) भी है; क्योंकि व्यक्ति किसी स्थान पर ही टिकेगा। जो व्यक्त होगा, साकार होगा, उसके लिए कोई स्थान तो ज़रूर चाहिए। तो स्थान भारत में है और भारत व्यक्तित्व भी है। दोनों की तरफ ये बात लागू होती है।

राम और रावण दोनों का जन्म भारत में है। अगर व्यक्तित्व को लिया जाए तो इससे तो फिर यही साबित होता है कि जो राम बनता है सो ही कलियुग के अंत में रावण बनता है। जो सतयुग के आदि में कृष्ण होता है वही फिर कलियुग के अंत में कंस बनता है। तो बाबा की बात बिलकुल सही है। मुरलियों में बोला हुआ है, ऐसे नहीं कि ये बात बोली हुई नहीं है– **"जो राम बनता है सो ही रावण बनता है और जो आदि में कृष्ण बनता है वही अंत में कंस बनता है"।** ये क्या बात हुई! ऐसा कैसे हो सकता है? जब परमात्मा शिव की प्रवेशता है तो कंस या रावण नहीं कहा जा सकता। और जब प्रवेशता नहीं है, वो आत्मा तमोप्रधान बन गई तो क्या कहेंगे? जो ऊँच ते ऊँच वही नीच ते नीच बनता है। ऊँच ते ऊँच धर्मपिताएँ इस समय नीच ते नीच तमोप्रधान हैं।

तो बताया हुआ है– शिव–शंकर को मिला के एक नहीं कर देना। भक्तिमार्ग में शंकर का चित्र ऐसे दिखाया है जैसे रावण। भयंकर चित्र भी बना देते हैं। अगर ऐसा ही है तो फिर परमात्मा उनको चुनता क्यों है? ऐसों को क्यों चुनता है जो नीच ते नीच बनते हैं? क्योंकि नीच ते नीच को ही परमात्मा आकर ऊँच ते ऊँच बनाता है। उनमें ऐसी कौन–सी शिफ़्त है, कौन–सी विशेषता है, जो नीच ते नीच बनने के बावजूद भी ऊँच ते ऊँच बन जाते हैं? अगर ऐसा ही है तब तो नीच बनना बहुत अच्छा है, अब तो नीचे बनते रहो। नीच, पतित, तमोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करना चाहिए; क्योंकि जितने नीचे गिरेंगे उतने ऊँचे चढ़ेंगे।

भारत में ही ऐसी क्या खासियत है जो भगवान भारत में ही आता है? और किसी देश में नहीं, और किसी व्यक्ति में नहीं? कोई तो खासियत होगी? अविनाशी है। अविनाशी सत्य को कहा जाता है। असत्य विनाशी होता है और सत्य अविनाशी होता है। गॉड इज़ ट्रुथ कहा जाता है। ट्रुथ बाप को क्या प्रिय है? सच्चाई। सच्चे दिल पर साहब राज़ी। कोई कितना भी पतित, तमोप्रधान, अजामिल जैसा महापापी क्यों न हो; लेकिन अगर परमात्मा के प्रति

सच्चा है, तो वो सच्चा परमात्मा के दिल में जगह पाता है। परमात्मा उसी को चुनता है। इसलिए मुरली 16.4.70 पृ. 1 के मध्य में बोला हुआ है– **"अपना पूरा पोतामेल देने वाला कोई कोटों में एक है।"** करोड़ों पुरुषार्थ करने वालों में कोई एक है जो पूरा–2 पोतामेल देता है, वरना कुछ न कुछ देह–अभिमान के वशीभूत होकर या परमात्मा बाप को न पहचानने के कारण पूरा–2 पोतामेल नहीं देते। परसेन्टेज में सही; लेकिन कुछ न कुछ छुपाते ज़रूर हैं। तो सुख देने वाले का जन्म–स्थान भारत में है और दुःख देने वाले का भी जन्म स्थान भारत में है।

इसलिए बोला हुआ है– **"राम–सीता को खादी की राजा–रानी कहेंगे"।** लक्ष्मी–नारायण को कहेंगे मखमल के राजा–रानी। और राम–सीता को खादी के राजा–रानी। लेकिन कब? कलियुग अंत में खादी के राजा–रानी और सतयुग आदि में वो ही आत्माएँ मखमल के महाराजा–महारानी बन जाते हैं। खादी की विशेषता है– खादी संगमयुगी बरसात के पीरियड में भारी हो जाती है। शरीर से चिपक जाती है। देह–अभिमान से चिपक जाती है, छूटती नहीं है और गंदी जल्दी होती है। फिर ये भी विशेषता है कि साफ भी जल्दी होती है। और सर्दी के सतयुग–त्रेता रूपी मौसम में गरम बहुत रहती है और द्वापर–कलियुग के गर्मी के मौसम में ठंडक भी बहुत देती है। सिर्फ संगमयुग के बरसात के पीरियड में दुखदायी हैं; क्योंकि उस समय कलियुग भी विराजता है। जब तक संगम का कलियुगी पीरियड है तब तक वो आत्माएँ विश्व के लिए दुःखदायी अनुभव में आती हैं; लेकिन परमात्मा की दृष्टि में नहीं; क्योंकि वो धर्मराज का पार्ट बजाने वाली आत्मा है। महाकाल और महाकाली का पार्ट बजाने वाली आत्माएँ हैं। तो ज्ञानी आत्मा के लिए तो ऐसा अनुभव नहीं होना चाहिए। बाकी जो अज्ञानी हैं या घड़ी–2 संशय–निश्चय के डोले में डोलते रहते हैं, उनको ज़रूर दुःखदायी अनुभव होंगे, रावण अनुभव होंगे।

रावण कोई खास एक व्यक्ति का नाम नहीं होता है। रावयते लोकान्। जो लोगों को रुलाता है वही रावण कहा जाता है। अब कारण देखना बाद की बात है। किस कारण रुलाया? अच्छे कारण से रुलाया या बुरे कारण से रुलाया? रुलाया, रुलाने का कर्तव्य किया तो रावण हुआ। तो दुःख देने वाले का भी जन्म स्थान वही है जो सुख देने वाले का जन्म स्थान है; परन्तु समझते कुछ भी नहीं है। अगर समझें तो शिव–शंकर को मिला के एक नहीं कर दें। भक्तिमार्ग में शिव और शंकर को मिला के एक कर दिया। आदम और खुदा को मिला के एक कर दिया। कहते भी हैं– **'आदम को खुदा मत कहो आदम खुदा नहीं; लेकिन खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं'।** लेकिन कब? जब खुदा उसमें प्रवेश होता है तब जुदा नहीं है। बाकी कोई हर समय बैल पर सवारी थोड़े ही होती है। जब सवारी होगी, तो जुदा नहीं हैं और सवारी नहीं होगी, तो जुदा हैं। तो स्वभाव–संस्कार में फिर फर्क पड़ेगा या नहीं? जब शिवबाप की प्रवेशता होगी तो स्वभाव–संस्कार में फर्क ज़रूर पड़ेगा और जब प्रवेशता नहीं होगी तो भी फर्क ज़रूर पड़ेगा। अच्छा। तो अब हम सम्पर्क में किसके आएँ? हम संबन्ध में किसके आएँ? शिवबाबा का तो पता ही नहीं लगता कि किस घड़ी प्रवेश होता है और किस घड़ी चला जाता है। उसके जन्म का तो पता मालूम ही नहीं पड़ता। ना आने का पता लगता है, न जाने का। हाँ, ज्ञान से पता चलता है। लेकिन बाबा ने ये डायरेक्शन दिया हुआ है– **"तुम बच्चे ऐसा ही समझो कि शिवबाबा सदैव इसमें बैठा हुआ है"**। मैं इनकी हर एक एक्टिविटी का ज़िम्मेवार हूँ। ये उल्टा करे या सुल्टा। उल्टा भी करेगा तो भी मैं इसको सुल्टा बना दूँगा। अब ये तो धारणा करना बहुत मुश्किल है; लेकिन मुश्किल को सहज करने वाला बाप कहते हैं कि जिनका मेरे से लव है, तो लव में कोई भी चीज़, कोई भी काम मुश्किल नहीं होता। प्यार एक ऐसी चीज़ है जो पत्थर को भी पिघला देता है।

तो रावण को चेन्ज करना कोई बड़ी बात नहीं है। आखिर हमने पहचाना किसको है? ब्रह्मा–विष्णु–शंकर को पहचाना है या शिवबाप ज्योतिबिन्दु गॉड फादर को पहचाना है? चेन्ज होने वालों को पहचाना है या जो सदा अपरिवर्तनीय है, सदाशिव है उसको पहचाना है? हमने कनेक्शन किससे जोड़ा है? कौन–सी आत्मा से? शिव से कनेक्शन जोड़ा है या कलियुग के अंत में आकर के जो शव बन जाते हैं, शव माना मुर्दा, कब्रदाखिल हो जाते हैं उनको पहचाना है? अरे, ब्रह्मा–विष्णु–शंकर का पार्ट बजाने वाली जो साकार सृष्टि की आत्माएँ हैं, उनको तो हम 63 जन्म अच्छी तरह से पहचानते रहे। उनको पहचानना तो क्या पहचानना हुआ? अब हमने किसको पहचाना है? अब तमोप्रधान में आए हुए उस सतोप्रधान परमात्मा को पहचाना है। परमपिता को पहचाना है, जो कभी चेन्ज होने वाला नहीं है। उसकी आत्मा कभी ऊपर और नीचे नहीं होती। उसका नाम दिया हुआ **'अच्युतम'**। जो कभी ऊँची स्टेज से नीचे नहीं गिरता। कभी नीची स्टेज का पार्ट नहीं बजाता।

तो ये समझने की बात है कि सुख देने वाले का जन्मस्थान और दुःख देने वाले का जन्मस्थान है तो भारत में ही। समय भी एक है; क्योंकि संगमयुग में ही राम और रावण की पहचान होती है। प्रत्यक्षता होती है। उससे पहले तो हम रावण को जानते ही नहीं। समझते हैं दस सिर का कोई व्यक्ति होगा। दस सिर का तो कोई व्यक्ति होता ही नहीं। वह है ऊँच ते ऊँच भगवान की जयंती, जो भारत में आते हैं। उनका नाम है 'शिव'। 'शिव' अर्थात् 'कल्याणकारी'। और जहाँ कल्याण है वहाँ रोने–रुलाने का प्रश्न नहीं हो सकता। ज्ञान में चलने के बावजूद भी जो आत्माएँ किसी भी कारण रोती हैं या रुलाती हैं तो वो कल्याण का कार्य नहीं है। इसलिए बाबा कहते हैं– **"मैं रोने वालों को पसंद नहीं करता"।** शिवबाबा का नाम है 'शिव' तो काम भी है 'शिव' अर्थात् 'कल्याणकारी'। किसी भी

बात में वो अकल्याणकारी नहीं है। हम भले अज्ञानता के कारण उसको अकल्याणकारी समझें; लेकिन रिज़ल्ट में बाद में समझेंगे कि परमात्मा हर तरीके से, हर प्रकार से कल्याणकारी ही है।

ये किसको पता नहीं है कि वो बाप कैसे आकर के सुख देते हैं। ये तरीके का पता नहीं है कि परमात्मा का सुख देने का तरीका क्या है। दुःख देने वालों के तरीके का पता लगा लो। दुःखदायी कौन? रावण। रावण कब से आता है? द्वापरयुग से। द्वापरयुग से रावण आता है तो नाम पड़ा द्वापर। माना दो पुर। एक पुर नहीं, दो पुर। जैसे दो घर बन जाएँ। बाप के दो बच्चे हों और बाप के सामने ही दोनों अलग–अलग हो जाएँ, तो बाप का नाम बदनाम हुआ या सदनाम हुआ? एकता खण्डित हुई या बनी रही? खून एक कहेंगे? ज़रूर कहीं न कहीं, कोई न कोई मिक्सचैरिटी है, तो स्वभाव–संस्कार टकराने लगे। एक घर नहीं रहा। अब जब एक घर नहीं है, घर ही दो हो गए तो टकराव तो ज़रूर होगा; क्योंकि बीच में दीवालें बन गईं और जहाँ दीवालें बनती हैं वहाँ दिल टूटते हैं। तो बाप आकर के कैसे सुख देते हैं ये भी नहीं जानते। रावण कैसे दुख देते हैं ये भी नहीं जानते। अभी तुमको नॉलेज है कि बाप कैसे आकर के सुख देते हैं। बाद में ये नॉलेज भी प्रायःलोप हो जावेगी। सुख देने वाले की ही महिमा गाई जाती है। दुःख देने वाले का किसको पता नहीं है। जब पता ही नहीं पड़ता तो महिमा या ग्लानि करने की बात ही नहीं।

रावण को वर्ष–वर्ष जलाते हैं। क्यों, हर वर्ष क्यों जलाते हैं? एक बार जल गया तो खलास हो गया। फिर वर्ष–वर्ष जलाने की क्या बात? क्योंकि मरता ही नहीं। अरे, कोई चीज़ एक बार जला दी जाती है, राख कर दी जाती है तो खलास हो जाती है कि बार–2 जलाने की ज़रूरत पड़ती है? ये है संगमयुग की बात। संगमयुग में 63 जन्मों का जो देहभान भरा हुआ है, वो कोई एकदम खलास नहीं होता। जो बीजरूप आत्माएँ हैं, बीज बनते हैं वो तो बहुत ही जटिल हैं। जड़ों के ऊपर भी छिलका होता है, बीजों के ऊपर भी छिलका होता है। जब बीज सुधर जाए तो सारी सृष्टि सुधर जाए। इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर या इस सृष्टि रूपी झाड़ पर कोई–कोई पत्ते हैं ढेर के ढेर। पत्तों का परिवर्तन तो जल्दी हो सकता है; लेकिन बीजों का परिवर्तन जल्दी नहीं होता; क्योंकि बीज अगर सुधर जाए तो सारा वृक्ष सुधर जाए।

ब्राम्हणों की संगमयुगी दुनिया में बीजरूप आत्माएँ भी हैं जो पूरे 84 जन्म लेने वाली हैं, आधारमूर्त आत्माएँ भी हैं जो नम्बरवार जन्म लेने वाली हैं और फिर ढेर के ढेर 500 करोड़ पत्ते भी हैं। ऊपर से आने वाले धर्मपिताएँ जो द्वैत फैलाते हैं। दो मार्ग चला देते हैं। पहले तो दुनिया में एक ही मार्ग था। एक ही देवी–देवता सनातन धर्म था। दूसरा कोई धर्म नहीं था। दूसरा कोई राजा नही था। बाद में जब ये धर्मपिताएँ आते हैं तो इनके आने से दो–दो मतें हो जाती हैं। मतें बढ़ती चली जाती हैं तो आपस में टकराव होता है और टकराव होने से दुःख शुरू होता है। बाप जब आता है तो पहले यही काम करता है 'एकता' का। और एकता 'पवित्रता' के बगैर नहीं हो सकती। एक के प्रति जब तक दृष्टि, वृत्ति, कृति, मन–वचन–कर्म, समय, सम्पर्क, सम्बंध, तन–मन–धन पूरा अर्पण नहीं है, तो वो एकता की पवित्रता नहीं आ सकती। प्योरिटी के बगैर यूनिटी नहीं हो सकती। जब द्वैत पैदा होता है तो यूनिटी टूटती है। दुनिया में संगठन भंग होता है और आपस में टकराव शुरू होता है। तो बाप आकर यही तरीका बताते हैं, सिखाते हैं कि अब एकता पैदा करो। पवित्रता अपने जीवन में अपनाओ। 'एक बाप दूसरा न कोई'।

अगर एक बाप के प्रति सौ परसेन्ट तन–मन–धन, समय, सम्पर्क, सम्बंध सब अर्पण कर दिया जाए, तो उसी समय से वो आत्मा सुखी हो जाएगी। दुःख लेश–मात्र भी अनुभव नहीं कर सकती। गैरन्टी है। लेकिन बाबा मुरलियों में प्रश्न पूछते रहते हैं– **"हम गॉड फादर के बच्चे तो फिर हम दुःखी क्यों हैं?"** हम नर्क में क्यों बैठे हैं? अरबपति, करोड़पति का बच्चा हो और पैसे–पैसे का मोहताज। ऐसा कैसे हो सकता है? ज़रूर उसका सम्बंध/कनेक्शन बाप से टूटा हुआ है। कनेक्शन कहीं दूसरों से जुटा हुआ है, जो उसको नीचे ले जाने वाले हैं। पैसे–पैसे के लिए मोहताज बनाने वाले हैं। तो ऐसे ही परमात्मा बाप से जब तक हम आत्माओं का पूरा कनेक्शन नहीं जुटा है तन से, मन से, धन से, ऐसे नहीं कि तन से कनेक्शन जुट गया, तो मन से ना जुड़े या कोई कहे मन–बुद्धि तो हमारी परमात्मा में ही है, तन से भल हम दूर हैं। नहीं। जहाँ हमारा तन होगा वहाँ हमारा मन ज़रूर जाएगा, धन ज़रूर जाएगा। ऐसे नहीं कि तन और धन दूसरी जगह लगाते रहें और मन कहीं दूसरी जगह लगा रहे। नहीं। और मन जब, जहाँ पहुँच जाता है तो तन भी वहीं पहुँचेगा। दोनों अरस–परस है; क्योंकि मन की शक्ति तो बहुत तीव्र शक्ति है। मन की एकाग्रता अगर एक जगह एकाग्र हो जाए, परमात्मा के प्रति अग्रसारित हो जाए, मुड़ जाए तो दुनिया की कोई ताकत नहीं है कि जो तन को और उसके धन को रोक सके। तो सुख कहाँ से आता है और दुख कब आता है? द्वैत से आता है दुख और अद्वैत से आता है सुख। एक में है सुख और अनेक में है दुःख।

500 करोड़ मनुष्यात्माओं में से ऐसी भी कोई आत्माएँ होंगी नम्बरवार जो अपने 84 जन्मों में एक के साथ ही संबन्ध जोड़ती होंगी। कौन–सा सम्बंध? सब संबन्धों में से खास संबन्ध कौन–सा है, जो मरते दम तक मनुष्य का पीछा नहीं छोड़ता? सतयुग आदि से लेकर के कलियुग अंत तक वो संबन्ध खींचता रहता है। वो कौन–सा सम्बंध है? (किसी ने कहा– पिता का) पिता का नहीं। अगर पिता का ही संबंध मुख्य होता फिर तो सबको पुरुष का जन्म मिलना चाहिए। लक्ष्मी जब शरीर छोड़े तो उसे किसकी स्मृति आएगी? नारायण की ही स्मृति आएगी। तो पुरुष का

जन्म मिलता है। और नारायण शरीर छोड़ता है तो किसकी स्मृति में शरीर छोड़ता है? लक्ष्मी की स्मृति में, तो किसका जन्म मिलेगा? स्त्री चोला मिलेगा। अगर बाप की ही स्मृति में सब पुरुष या स्त्री शरीर छोड़ते रहे हों तो उनको जन्म भी पुरुष का मिलना चाहिए। लेकिन ये सृष्टि होती है दो से। स्त्री–पुरुष के संयोग से। अब वो संयोग श्रेष्ठाचारी हो, श्रेष्ठ इन्द्रियों का हो या भ्रष्ट इन्द्रियों का हो नीची दुनिया का; लेकिन संयोग से ही–उस योग से ही सृष्टि संचालित होती है। तो दो का ही खेल है। दो कौन? स्त्री और पुरुष। भल सतयुग–त्रेता में स्त्री–पुरुष का भान नहीं रहेगा; लेकिन सम्बंध तो स्त्री–पुरुष का है ना। देहभान नहीं होगा; लेकिन संतान आखिर मुख के प्यार से तो होगी ना। श्रेष्ठ इन्द्रियों के कनेक्शन से होगी ना। तो क्या श्रेष्ठ इन्द्रियाँ आँख या मुख ये देह का अंग नहीं है? अंग तो हैं; लेकिन श्रेष्ठ इन्द्रियाँ हैं। इसमें मूत–पलीती होने की बात नहीं है। और जो श्रेष्ठता है वो स्थायी ज़्यादा होती है। तो देवताओं का सुख होता है स्थायी और द्वापरयुग से मनुष्यों का सुख होता है क्षणभंगुर; क्योंकि नीची स्टेज का सुख है। जितनी सच्चाई होगी उतना ज़्यादा स्थिरियम होगा और जितना झूठापन होगा, नीचपना होगा उतना ही स्थिरता नहीं रह सकती। गिरेगा ज़रूर।

बाप समझाते हैं कि हर आत्मा का पार्ट अलग–अलग है। कोई में तो अद्वैत की वासना बहुत भरी हुई है और कोई में द्वैत की वासना बहुत भरी हुई है। तो जिन आत्माओं में द्वैत की वासना बहुत भरी हुई है, 63 जन्मों के, अनेक जन्मों के संस्कार हैं अनेकों के साथ व्यभिचारी बनकर के रहने के वो आत्माएँ दुख का लेन–देन ज़रूर करेंगी, परमात्मा कितना भी ज्ञान सुनाए; लेकिन उनके ऊपर जल्दी असर पड़ने वाला नहीं है। इसलिए बाप को भारत में आना पड़ता है। भारत ही एक ऐसा खंड है जहाँ पवित्रता को विशेष मान दिया गया है, आदि से लेकर के अंत तक। अभी भी भारत में कन्याओं–माताओं की प्योरिटी का विशेष ध्यान रखा जाता है। विदेशों में और दूसरे धर्मों में ये बात नहीं है। वहाँ डायवोर्स की प्रथा, तलाक की प्रथा धर्म में नूँधी हुई है। भारत में ये बात अच्छी नहीं मानी जाती।

तो प्रश्न है– पतित कैसे बने? (किसी ने कुछ कहा– ...) हाँ। दूसरे धर्म की जो आत्माएँ आईं, दूसरी प्रकार की धारणाएँ बनाने वालीं, फैलाने वालीं, चलाने वालीं उन आत्माओं के संग के रंग में आने से हम पतित बने। फिर क्या करें? तो अब उल्टा कर देना चाहिए। जो अव्वल नम्बर का धर्म स्थापन करने वाला अल्लाह अव्वलदीन है, उस अल्लाह अव्वलदीन के धर्म को फॉलो करें। उस एक का ही संग करें– मन से भी, तन से भी; क्योंकि लेन–देन करने से भी कर्मों का बन्धन ज़रूर बंधता है तो हमको 21 जन्मों की सुख की प्राप्ति हो सकती है। 21 जन्मों के लिये तो गैरन्टी है। फिर जितना, जैसा जिसका पुरुषार्थ। अच्छा पुरुषार्थी होगा– एक बाप दूसरा न कोई का, इस रास्ते का, तो हो सकता है कि 84 जन्मों में से 82/83 जन्म तक भी सुख–शान्ति में रहे; लेकिन लास्ट जन्म में तो दुःख ज़रूर होगा; क्योंकि जब तक दुःख न हो तो सुख की वैल्यू नहीं हो सकती। रात न हो तो दिन की कोई वैल्यू नहीं रहेगी। तो पतित कैसे बनते हैं? एक के संग से पावन बनते हैं और अनेकों के संग से पतित बनते हैं। पुकारते हैं; परन्तु अर्थ नहीं जानते हैं। क्या पुकारते हैं? हे! पतित–पावन आओ, हमको पतित से पावन बनाओ। ऐसे कोई नहीं कहता आकर के ज्ञान सुनाओ। भक्तिमार्ग में कहते हैं पतित–पावन आओ। ज्ञान सुनाने के लिये नहीं कहते। क्या कहते हैं? हम पतितों को, हम दुर्गति को पाने वालों की सद्गति करो। गति और सद्गति दो। सुख और शान्ति दो।

इस समय है ही भारत में भक्तिमार्ग। शास्त्र भी सब भक्तिमार्ग के हैं। शास्त्रों में कोई सद्गति का ज्ञान नहीं है। क्यों? दुर्गति का ज्ञान है? शास्त्रों में अगर सद्गति का ज्ञान होता तो 63 जन्मों में सद्गति होती; लेकिन होती क्या रही? शास्त्र पढ़ते गए, दुर्गति होती गई। फिर सद्गति कहाँ से होगी? शास्त्रों से सद्गति नहीं होती। शास्त्रों में सबसे ऊँचे से ऊँचा जो शास्त्र है श्रीमद् भगवद् गीता। एक गीता शास्त्र ही भगवान का गाया हुआ माना जाता है; लेकिन वो कागज़ का शास्त्र नहीं। शास माना शासन करना। शास्त्र माना शासन करने वाला विधान। और अच्छे से अच्छा शासन करने का विधान, 'संविधान' बनाने वाला, बताने वाला एक परमपिता परमात्मा के सिवाय कोई हो नहीं सकता। जो उस संविधान को पूरा–2 समझता है, जानता है, उसको ही वो परमात्मा बाप आकर के विश्व की बादशाही देता है। फिर उसके बाद नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार।

तो सद्गति का ज्ञान किसी के पास नहीं है। शास्त्रों में भी नहीं है, तो शास्त्रकारों में भी नहीं है। बाप आकर के मुख से जो ज्ञान सुनाते हैं वो डायरैक्ट मुख से सुनाया हुआ ज्ञान ही गीता है। बाकी कोई बाद में टेप रिकॉर्डर में भरा हुआ, कागज़ में लिखा हुआ या किसी दूसरे मुख से सुनाया हुआ वो ज्ञान नहीं है; निश्चित रूप से अज्ञान है। जैसे– एक घड़ा दूध भर दो और उसमें एक बूंद विष का आरोपण कर दो। क्या हो जाएगा? सारा ही विष हो जाएगा। तो परमात्मा जिस मुख का, मुकर्रर तन का आधार लेकर के जो सुनाते हैं वो तो सौ परसेन्ट 'अमृत' है; लेकिन दूसरी मनुष्यात्मा, किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा परमात्म ज्ञान सुनाते समय अगर थोड़ा भी मिक्स हो गया तो वो क्या हो जाएगा? अंत में उसका रिज़ल्ट क्या निकलेगा? विष हो जाएगा; क्योंकि सौ परसेन्ट सच्चा तो इस दुनिया में कोई है ही नहीं, मिक्स तो ज़रूर कुछ न कुछ होता ही रहेगा। तो एक बाप दूसरा न कोई।

कितनी बार मुरलियों में बाबा ने बच्चों को समझाया है– बच्चे, **''एक सत्गुरू निराकार से सद्गति और अनेक देहधारी मनुष्य गुरुओं से दुर्गति''**। (मु. 11.3.69 पृ.1 अंत) तो जब अनेक देहधारी मनुष्य गुरुओं से दुर्गति, तो हम ज्ञान सुनने के लिये, उसको धारण करने के लिए आखिर पूरी श्रद्धा–विश्वास, निश्चय क्या किसी आत्मा के ऊपर न बैठाएँ? पर ऐसा तो हो नहीं सकता कि हर समय परमात्मा बाप ही हमारे कान में ज्ञान फूँकता रहेगा। ऐसा तो जिस तन में प्रवेश करता है उसमें भी नहीं होता, तो दूसरों में कैसे हो सकता है? फिर क्या किया जाए? तो ये है स्मृति की बात। **बाबा कहते हैं– ''तुम बच्चे जितना मेरे को स्मृति में रखेंगे, याद में रहेंगे उतना मैं तुम्हारे साथ हूँ।''** बाप से बातें करो। चलते–फिरते, उठते–बैठते कर्मयोग में लगे रहो। कर्मयोगी बनो। परमात्मा बाप से बातें करना वो भी योग है, वो कोई वियोग नहीं है। लेकिन प्रीत बुद्धि होंगे तो बातें भी कर सकेंगे और विपरीत बुद्धि होंगे तो प्यार की बातें नहीं कर सकेंगे। फिर अंदर–अंदर ग्लानि और संघर्ष चलता रहेगा। झगड़ा चलेगा जैसे रावण का राम से झगड़ा चला। तो बजाय प्राप्ति होने के और ही घाटा होगा।

ज्ञान सागर एक ही परमपिता परमात्मा है, ज़रूर उनको ही ज्ञान देना है। ज्ञान और कोई दे ही नहीं सकता। ज्ञान माना पहचान। ज्ञान जानना, जानकारी। सच्ची जानकारी है– ज्ञान और झूठी जानकारी है– अज्ञान। तो साइन्सदाँ लोगों को जिस बात का ज्ञान है, क्या वो अज्ञान है? आजकल के वैज्ञानिकों को किस बात का ज्ञान है? झूठा ज्ञान है? झूठा ज्ञान तो नहीं कहेंगे। उनका झूठा ज्ञान कहेंगे या सच्चा ज्ञान कहेंगे? झूठा इसलिए कहेंगे कि जो प्रकृति के पाँच तत्व हैं उनका उन्होंने विश्लेषण तो किया है, जानकारी तो ली है; लेकिन उसकी पूरी जानकारी सिवाय प्रकृतिपति के और किसी को नहीं हो सकती। विज्ञान चाहे जितना ही आगे बढ़ जाए; लेकिन पूरी–पूरी जानकारी किसी को नहीं हो सकती। प्रकृतिपति बाप ही पाँच तत्वों का पूरा अन्वेषण करने वाला है, जानने वाला है। उसके सिवाय और कोई प्रकृति के पाँच तत्वों को, रावण को और राम को अलग–अलग करके बताने वाला नहीं है। तो ज्ञान वही देता है। उस ही को ज्ञान देना है। वो ही सतगुरू है। जब एक ही सतगुरू है तो बाकी सब क्या हो गए? बाकी सब हो गए झूठे गुरू। वो ही सद्गति दाता है; इसलिए उनको पुकारते हैं– आकर के दुर्गति से बचाओ। दुर्गति से बचाओ! बचाया किससे जाता है? कोई चिल्लाए कि हमको बचाओ! बचाओ! तो इसका मतलब कोई है जो उसको तंग कर रहा है। कोई है जो पीछे पड़े हुए हैं दुर्गति में ले जाने के। तो दुर्गति से बचाओ माना? उनसे बचाओ। तो परमात्मा बाप आकर के दुर्गति से बचाता है, सद्गति देता है; इसलिए उनको पुकारते हैं कि आकर के दुर्गति से बचाओ। ऐसे नहीं कि परमात्मा आया और ज्ञान सुना के चला गया और फिर दुर्गति से हम बचते रहेंगे। नहीं। वो आकर के स्वयं दुर्गति से बचाता है। ऐसे नहीं सिर्फ ज्ञान सुना के चला जाता है, ब्राह्मण बना के चला जाता है, नहीं। शूद्र से ब्राह्मण बनना है पहली मशीनरी। फिर ब्राह्मण से देवता बनाना ये है दूसरी मशीनरी। तो तुम बच्चों की है डबल मशीनरी। मिशनरी कहो। इसलिए उनको पुकारते हैं कि आकर के दुर्गति से बचाओ।

परन्तु हम सतोप्रधान पुजारी बनते हैं। हम पुर्नजन्म लेते आए हैं। पहले–2 जन्म ज़रूर अच्छा होगा। फिर उतरते आते हैं। जो भी मनुष्य आते हैं सीढ़ी तो ज़रूर उतरेंगे। भल बुद्ध आदि का नाम सीढ़ी में नहीं दिया हुआ है। क्यों? बुद्ध आदि का नाम सीढ़ी में क्यों नहीं दिया हुआ है? क्योंकि सीढ़ी है 84 जन्म लेने वालों की। कम जन्म लेने वालों की सीढ़ी नहीं है। अगर दूसरे धर्म वालों को सीढ़ी में दिखायेंगे, फिर उन्हों को भी सीढ़ी तो उतरनी है। उनको सतो, रजो, तमो में तो आना ही है। अभी सब तमोप्रधान हैं।

अब बाप समझाते हैं ये शास्त्र आदि सब भक्तिमार्ग के हैं। ज्ञानमार्ग के कोई भी शास्त्र नहीं होते। जिसमें अनेक प्रकार के कर्मकाण्ड हैं। कर्मकाण्ड– ये करो, वो करो, वो करो। सच्चा कर्मयोग कोई सिखाने वाले साथ नहीं हैं। ज्ञान देने वाला तो एक ही बाप है। ज्ञान सागर ही आकर के सच्चा ज्ञान सुनाते हैं, बाकी सब झूठा ज्ञान सुनाते हैं। आधा कल्प है दिन, उसमें भक्ति की बात नहीं है। दिन कौन–सा है आधा कल्प? ऐसे नहीं सतयुग–त्रेता आधा कल्प सुख होता है (तो वो दिन हो गया) और द्वापर–कलियुग आधा कल्प दुःख होता है तो वो रात हो गई। वहाँ तो किसी को सुख और दुःख, रात और दिन का सच्चा ज्ञान ही नहीं है। तो कहाँ की बात है? ये संगमयुग की बात है जब ज्ञान सूर्य किसी साकार तन में प्रत्यक्ष होता है, तो जैसे दिन है और जब अप्रत्यक्ष हो जाता है, सन सेट हो जाता है तो अज्ञान अन्धेरी रात हो जाती है। ये सन सेट की यादगार कहाँ है? सन राइज की यादगार कहाँ है? माउन्ट आबू में सन सेट प्वाइन्ट दिखाया हुआ है। और दूसरा शहर कौन–सा है, जहाँ ज्ञान सूर्य उदय होता है? कम्पिल? यहाँ उदय हो गया? पड़ोस में जाकर देखो। भई दीपक के नीचे तो अन्धेरा हो सकता है, और सूर्य के नीचे? जहाँ सूर्य होगा वहाँ अन्धेरा हो सकता है? नहीं। माउन्ट आबू में अगर सन राइज हुआ होता तो माउन्ट आबू के रहने वाले तो कोई भी आज तक नहीं समझ सके। कोई ब्रह्माकुमार बने हैं? माउन्ट आबू का खास रहने वाला भी अभी तक कोई ब्रह्माकुमार नहीं बन पाया; क्योंकि दीपक तले अन्धेरा। तो ज्ञान सूर्य उदय हुआ नहीं कहा जा सकता। तो कोई शहर है जिसका नाम ही रखा हुआ है– 'ज्ञान सूर्य प्रगटा तो अज्ञान अन्धेर विनाश'। वो शहर तो ज़रूर राजाओं के स्थान में होना चाहिए; क्योंकि राजा बनने वाली राजा बेटा आत्माएँ ही परमात्मा बाप को प्रत्यक्ष

करेंगी। अब हमारा तो स्थान भी कोई स्थूल नहीं है। हमारा सूर्य भी कोई स्थूल नहीं है तो चन्द्रमा भी कोई स्थूल नहीं है। हमारे शहर भी कोई स्थूल नहीं है। दिल्ली भी चैतन्य तो बम्बई भी चैतन्य तो कलकत्ता भी चैतन्य, लंडन भी चैतन्य, न्यूयॉर्क भी चैतन्य। तो बेहद का जो राजस्थान है उसमें भी जो खास नई दुनिया की पालना करने का नइपाल है, वहाँ कोई ऐसा शहर भी है, नई दुनिया की पालना करने वालों के संगठन में, जहाँ से परमात्मा बाप विशेष रूप से प्रत्यक्ष होता है।

तो वो ज्ञान देने वाला है एक ही। सच्चा ज्ञान सुनाता है। उसमें भी फिर आधा कल्प दिन और आधा कल्प रात होती है। दिन में कभी ठोकरें नहीं खाते हैं। दिन में कभी ठोकरें खाने की बात नहीं है; क्योंकि ज्ञान सूर्य प्रगट हुआ पड़ा है। बुद्धि रूपी धरणी में अगर ज्ञान सूर्य प्रत्यक्ष हो जाए, निश्चय हो जाए, तो निश्चय वाली आत्मा कभी ठोकरें नहीं खा सकती। ठोकरें कौन–सी आत्मा खाएगी? जिसकी बुद्धि में अज्ञान का अन्धेरा होगा, जिसके सामने ज्ञान सूर्य प्रत्यक्ष नहीं होगा। ज्ञान सूर्य छुपा हुआ है तो ज़रूर अन्धेरा होगा और अन्धेरा है तो निश्चय बुद्धि कहेंगे? निश्चय बुद्धि विजयन्ति की लिस्ट में कहेंगे? नहीं कह सकते। ज़रूर वो अन्धेरी रात में हैं। ब्रह्मा का दिन नहीं कहेंगे। क्या कहेंगे उस समय? ब्रह्मा की रात। जिस समय जिन बच्चों को अनिश्चय होता है उस समय उनका बाप मर जाता है। घड़ी–घड़ी निश्चय बुद्धि, घड़ी–घड़ी अनिश्चय बुद्धि। तो घड़ी–घड़ी में बाप ज़िन्दा होता है, घड़ी–घड़ी में बाप मर जाता है? बाप तो न ही ज़िन्दा होता है, न मरता है। वो तो सृष्टि रूपी रंगमंच पर आया हुआ है तो काम पूरा करके ही जाएगा; लेकिन बुद्धि रूपी धरणी की बात है।

हर आत्मा की बुद्धि रूपी धरणी अपनी–अपनी है, तो आत्मा कभी विदेश में चली जाती है। और जब बुद्धि रूपी धरणी विदेशी बन जाती है यानी विदेशियों के प्रभाव में आ जाती है, तो परमात्मा बाप गुप्त हो जाता है। अन्धेरा हो जाता है। लेकिन बाबा ने तो कहा है कि **''विदेशी ही बाप को प्रत्यक्ष करेंगे''**। करेंगे नहीं; किया है। ब्राह्मणों के परिवार में, ब्राह्मणों की दुनिया में जो बीजरूप आत्माएँ हैं, उन बीजरूप आत्माओं में से जो दूसरे धर्मों के सशक्त बीज हैं, उन्होंने सन् 1976 में बाप को प्रत्यक्ष किया। जिसकी यादगार में ब्रह्माकुमार–कुमारियों ने बाप का प्रत्यक्षता वर्ष मनाया। तो विदेशी बीजों ने बाप को प्रत्यक्ष तो किया; लेकिन एक तरफ प्रत्यक्ष भी करते हैं और पूरा ज्ञान न होने के कारण सब अनिश्चय बुद्धि भी हो जाते हैं। कुंभकर्णी निद्रा में सो जाते हैं। तो प्रत्यक्ष हुआ, न हुआ बराबर हो जाता है; क्योंकि अनेक जन्मों की, पूर्व जन्मों की प्योरिटी की वो पावर नहीं है, वो विघ्न बनकर के सामने आ जाती है और ज्ञानमार्ग में चलते–चलते अगर कहीं इम्प्योरिटी आ गई, तो पुरुषार्थ डाउन ज़रूर होगा। अपवित्रता भी चलती रहे और ज्ञान भी चलता रहे ऐसा हो नहीं सकता। परमात्म ज्ञान उसी बुद्धि में टिकेगा जिसमें प्योरिटी होगी। जो जितनी पवित्रता का पुरुषार्थ करेगा उसमें उतना ही जास्ती ज्ञान टिकेगा।

अच्छा, रुद्रमाला के मणके तो जन्म–जन्मान्तर के राजाएँ हैं, खास करके भारत के राजाएँ जो अपवित्र बनते रहे और यूनिटी को तोड़ते रहे। तो जन्म–जन्मान्तर की राजा बनने वाली आत्माएँ रुद्रमाला के मणके, उनमें प्योरिटी कहेंगे या नहीं कहेंगे? उनमें प्योरिटी तो नहीं है। तो जब प्योरिटी नहीं है तो ज्ञान ठहरेगा या नहीं ठहरेगा? जब प्योरिटी ही नहीं है तो ज्ञान कैसे ठहरेगा! बाबा ने तो कहा है कि **''सोने के पात्र में शेरनी का दूध ठहर सकता है''**। मिट्टी के पात्र में, देह–अभिमान की मिट्टी के पात्र में शेरनी का दूध नहीं ठहर सकता। त्रिमूर्ति में एक शेरनी है, एक शेर भी है। तो शेरनी के मुख से निकला हुआ ज्ञान दूध अपवित्र में नहीं ठहर सकता। न ठहरने का मतलब क्या हुआ? ब्राह्मणों की दुनिया में जो रुद्रमाला के मणके बनने वाली आत्माएँ हैं, एडवांस पार्टी की खास आत्माएँ, प्लैनिंग बुद्धि आत्माएँ, क्या वो ज्ञानी तू आत्माएँ नहीं हैं? ज्ञानी तू आत्मा हैं; वो ज्ञान ज्ञान क्या हुआ जो दूसरों के ऊपर छाप न छोड़े। अगर याद का बल नहीं है, परमात्म प्यार नहीं है तो ज़रूर इम्प्योरिटी है। मामेकम् याद करो। अगर मिक्सचैरिटी है तो ज़रूर इम्प्योरिटी है। फिर कितना भी ज्ञान सुनाते रहें। पहले तो जो ज़्यादा पवित्रता वाली आत्माएँ होंगी, जिनका पूर्व जन्मों का ज़्यादा पवित्रता का भंडार होगा वो सुनेंगी ही नहीं। जैसे ब्रह्माकुमार–कुमारी जाकर के संन्यासियों को ज्ञान सुनाते हैं, वो भल ऊपर से सुन लेते हैं; लेकिन अंदर से कुछ भी धारण नहीं करते; क्योंकि उनमें प्योरिटी की पावर भरी है। तो जब तक योग नहीं है, लव नहीं है, परमात्मा के प्रति प्योरिटी वाली वासना नहीं है तब तक दूसरी आत्मा के ऊपर असर नहीं पड़ सकता। उस ज्ञान तलवार में जौहर नहीं है याद का तो वो ज्ञानी नहीं, अज्ञानी है। उसको ज्ञानी तू आत्मा नहीं कहेंगे। ऐसे तो रावण को भी क्या कहा जाता था संसार में? रावण दुनिया की नज़र में ज्ञानी माना गया है या अज्ञानी? ब्राह्मण माना गया है या शूद्र? रावण क्या था? प्रकाण्ड विद्वान था। बहुत ज्ञानी था; लेकिन व्यभिचारी था और जब तक व्यभिचारी तब तक उसकी भी सद्गति या गति नहीं हो सकती।

अब बात चल रही थी– राम ही रावण बनता है और रावण फिर राम बनता है। तो राम वाली आत्मा की सद्गति कब होगी? जब अव्यभिचारी होगा तब? कि व्यभिचारी रहने से सद्गति हो जाएगी? कैसे होगी सद्गति? अव्यभिचारी बनने से सद्गति होगी। अच्छा, राम जब अव्यभिचारी बन जाएगा तो फिर दुनिया की सद्गति होगी?

राम जब अव्यभिचारी हो जाएगा तन से, धन से और मन से तो फिर गति–सद्गति का रास्ता बंद हो जाएगा या बंद नहीं होगा? क्योंकि गति–सद्गति तो सिवाय एक सुप्रीम सोल के कोई कर नहीं सकता। अब तो ये गुत्थी उलझ गई। क्योंकि राम वाली आत्मा अगर अव्यभिचारी बन गई तो परमात्मा शिव उसमें प्रवेश करना बंद कर देंगे। फिर जिनको जितना सद्गति और गति को पाना था सो पा लिया।

तो इसलिए वो एक सेकेण्ड नुँधा हुआ है ब्रह्मा सो विष्णु के लिए। चाहे वो व्यक्त ब्रह्मा हो, चाहे वो अव्यक्त ब्रह्मा हो। ब्रह्मा सो विष्णु बनने में सिर्फ एक सेकेण्ड; क्योंकि तीव्र गति है। तो जो पुरुषार्थ की तीव्र गति है, कोई तो दौड़ने वाले होते हैं देखा जाता है कि जो अच्छे दौड़ने वाले होते हैं वो पहले धीरे–धीरे दौड़ेंगे और जब लास्ट चान्स आएगा तो सारी ताकत लगा देंगे। शुरूवात में ही अगर थक गए, तो लास्ट में जो हाई जम्प लगाना है वो नहीं लगा सकते। तो ऐसे ही राम–कृष्ण अथवा रुद्रमाला के जो 108 बच्चे हैं वो भी बड़ी तीव्र गति वाले हैं और तीव्र गति होती है बिन्दु को याद करने से। मुरली में बोला हुआ है– **''निराकार प्रेमी क्षिप्र गति वाले होंगे।''** संस्कृत की गीता में भी ये बात आई हुई है– **''क्षिप्रम भवति धर्मात्मा''**। (9/31) बहुत तीव्रगामी होंगे; लेकिन अव्यक्त वाणी 18.1.70 पृ.166 में बाबा ने एक बात और बोली है कि **''साकार प्रेमी चरित्रवान होंगे''।** इसका मतलब निराकार प्रेमी दुश्चरित्र होंगे। होंगे तो नम्बरवार। एक जैसे तो सब नहीं हो सकते। तो जो निराकार प्रेमी दुश्चरित्र हैं, वो ज़रूर निराकारी स्टेज में, बिन्दु की याद में ज़्यादा टिकते हैं और साकार को छोड़ देते हैं। साकार की याद उनसे दूर हो जाती है। क्यों दूर हो जाती है? जब हमारा प्रवृत्ति मार्ग है, बुद्धि में बात बैठ गई कि शरीर के बिगर आत्मा जड़ होती है। बिना आत्मा के शरीर कुछ नहीं कर सकता और शरीर के बिगर आत्मा कुछ नहीं कर सकती। जैसे बाबा ने बोला कि **''शक्ति के बगैर शिव कुछ नहीं कर सकता और शिव के बगैर शक्तियाँ कुछ नहीं कर सकतीं।''** तो आत्मा और शरीर का कॉम्बीनेशन चाहिए। तो निराकार क्यों भूल जाता है या साकार ही क्यों याद रहता है? निराकार भूलता है चरित्रवान को और साकार भूलता है जो दुश्चरित्र होते हैं, जिनको ज्ञान तो मिल जाता है; लेकिन पूर्व जन्मों के दुश्चरित्र हैं तो साकार से उनको घृणा हो जाती है। क्योंकि पूर्व जन्मों में राजाओं की बार–बार यूनिटी टूटी है। यूनिटी क्यों टूटी है? क्योंकि अनुशासनहीनता बढ़ी है। जिसको ऊँचा दर्जा देना चाहिये उसको ऊँचा दर्जा नहीं दिया। घर में बाप होता है (...) (किसी ने कुछ कहा– ...) शव को नहीं देखो। शव (में) जब आत्मा ही नहीं है तो शव हुआ या शिव हुआ? शव माना मुर्दा। जब उसमें आत्मा ही नहीं है तो शव हुआ ना। क्या मुर्दे को देखने से प्राप्ति होगी? और मुर्दे में अगर आत्मा बैठी हुई हो तो उसको मुर्दा कहेंगे? फिर जीव आत्मा हुई ना। तो शव को देखते हैं क्या! शव को देखना कोई पसंद करेगा क्या? शव में तो बदबू आने लगेगी; क्योंकि उसमें आत्मा ही नहीं है। और यहाँ एक आत्मा तो क्या डबल–ट्रिबल आत्मा है। चैतन्यता की खान हो गई। तो जब डबल–ट्रिबल आत्मा है तो मुर्दा कहेंगे? शव कहेंगे? तो शव को न देखो भाई। शिव को देखो।

अगर शिव–शंकर को मिला दिया और शंकर को ही देखने लगे तो शंकर तो है विनाशकारी। उसका काम क्या है? कहाँ ले जाएगा? पूरी ही दुर्गति में ले जाएगा; क्योंकि बाबा ने शंकर को हज्जाम बताया है। सारा ही माथा मूँड़ लेगा। जैसे संन्यासियों का माथा मुँड़ जाता है ना। जैसे माया माथा मूँड़ लेती है। तो ऐसे शंकर को बताया है हज्जाम। पूरी ही दुर्गति में ले जाने वाला। तो फिर क्या हुआ? राम हुआ या रावण हुआ? रावण हुआ ना। (किसी ने कहा– राम हुआ।) राम हुआ! राम कैसे? जब माथा मूँड़ लिया तो राम कैसे हुआ? ये अपनी–अपनी स्मृति की बात है। जो साकार के साथ निराकार शिव ज्योतिबिन्दु को देखने के अभ्यासी हैं, प्रवृत्ति को देखने के अभ्यासी हैं, अनेक जन्मों के जिनके प्रवृत्ति के संस्कार हैं या प्रवृत्ति को निभाने के संस्कार हैं, उन आत्माओं को कोई कठिनाई महसूस नहीं होगी। कठिनाई किनको महसूस होगी? जिन्होंने पूर्व जन्मों में प्रवृत्ति को तोड़ा है, धोखा दिया है। एक प्रवृत्ति को छोड़ करके दूसरी प्रवृत्ति जोड़ी, तीसरी जोड़ी, चौथी जोड़ी तो दुःख का लेन–देन किया। व्यभिचारी बने और बनाया। तो ऐसी आत्माएँ जो हैं वो सही याद नहीं कर सकतीं। उनको कठिनाई अनुभव होगी। और जिनके पूर्व जन्मों के अच्छे संस्कार हैं, अव्यभिचारीपने के संस्कार हैं उनको साकार में निराकार देखना सहज अनुभव होगा। बुद्धि में बात तो आ गई ना कि साकार के बिगर निराकार आत्मा का कोई मूल्य नहीं। निराकार आत्मा का साकार के बिगर कोई मूल्य नहीं। प्रकृति जड़ है; लेकिन प्रकृति जब प्रकृतिपति के साथ है तो विनाशकारिणी नहीं हो सकती। प्रकृति विनाशकारिणी कब बनती है? पाँच तत्व जो हैं, वो उथल–पुथल कब मचाते हैं? सारी सृष्टि का प्रकृति के द्वारा विनाश होगा। सबसे बड़ा विनाश करेगी प्रकृति। नेचर। कब करेगी? अंत में। जब प्रकृतिपति से प्रकृति जुदा हो जाए। (...) (ओमशांति)